मुक्ति पर्व

जहां भी जाये जिधर से गुजरे खोले मुक्ति द्वार।

ये मुक्ति दात मेरा, ये मुक्ति दात मेरा।

बीडा इसने उठा लिया है मुक्त करे संसार

ये मुक्ति दात मेरा.....

जन्मो से बन्धनो में, जकडी हुई है हर आत्मा।

बन्धन से तोडता है और मिलता परमात्मा।

भरम मिटा केइस दुनिया पे करता है उपकार।

ये मुक्ति दात मेरा.....

बिन गुरु न ज्ञान मिलता, ज्ञान बिना न मिलती मुक्ति है।

मुक्ति जो चाहते हो, अपनालो इसको यही मुक्ति है।

इसकी ओट तू ले ले प्राणी, है सच्चा आधार।

ये मुक्ति दात मेरा.....

मुक्ति है दासी इसकी जिसको भी चाहे दे सकता है।

मंजिल को पाने का बस, सच्चा 'जगत' में यही रस्ता है।

जीवन नैया कर देता है भवसागर से पार।

ये मुक्ति दात मेरा.....

(तर्जः मिलो न तुम तो हम घबराये .....)